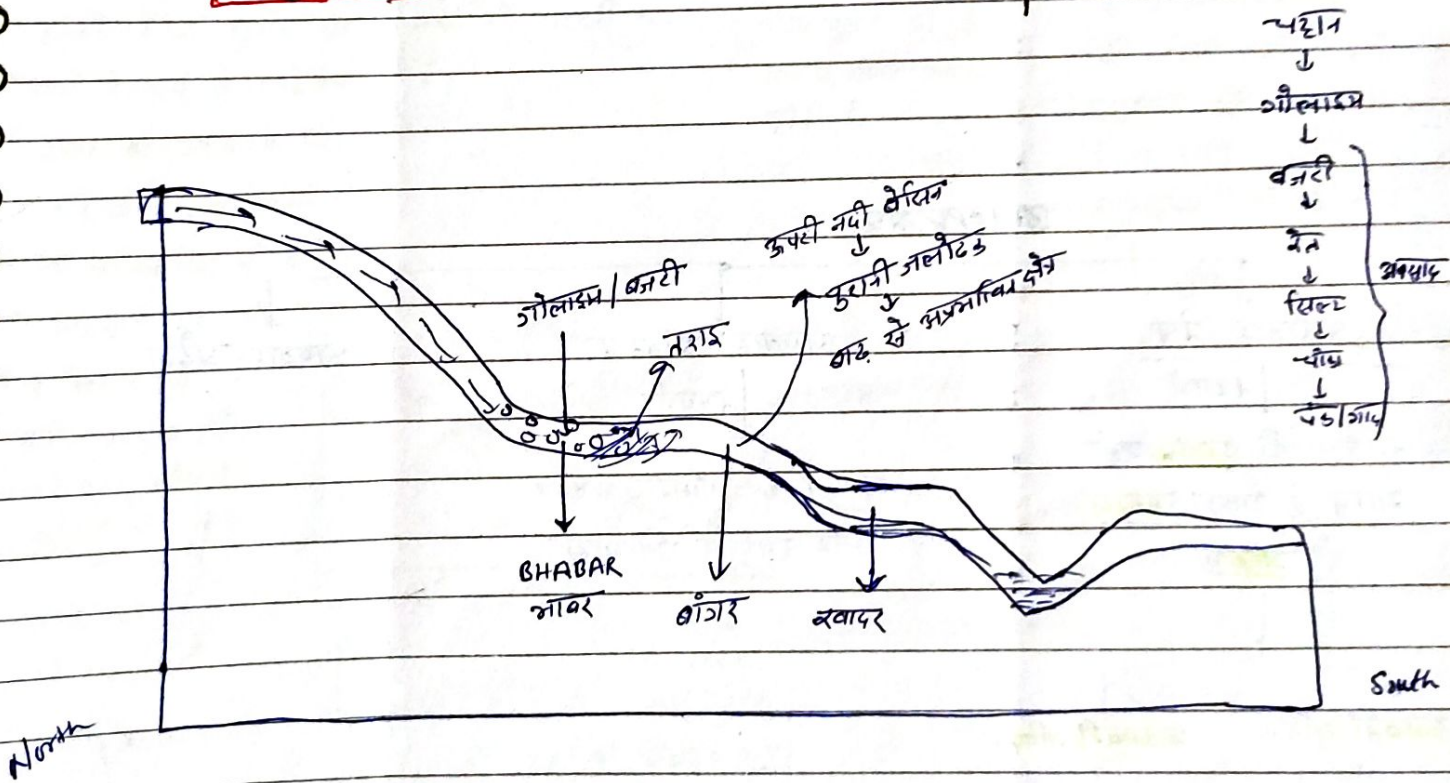


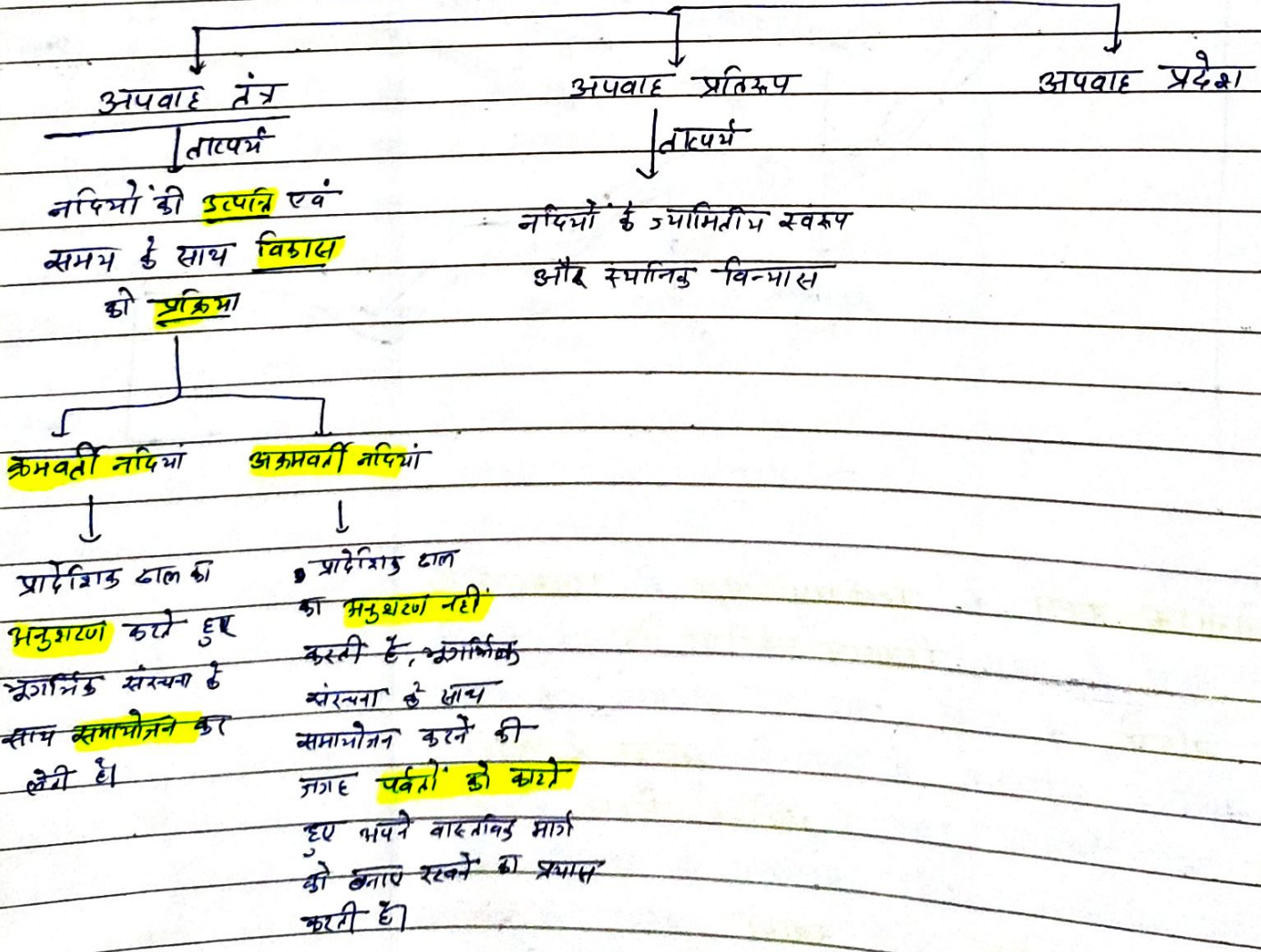
## भारत के उत्तरी मैदान की उत्पत्ति एवं संरचना

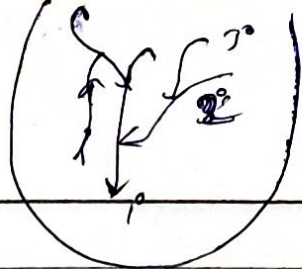


(Cenozoic)  
 → **सैनोजॉइक कल्प के Tertiary युग में एल्यूवियोसोन**  
**युग के बाद हिमालय पर्वतीय क्षेत्र से निकलने**  
**वाली नदियों के द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेप**  
**से जलोढ़क संरचना के रूप में भारत के उत्तरी**  
**मैदान का निर्माण हुआ। जलोढ़क मैदान को**  
**भू-वर्तिक संरचना और संगठन के आन्ध्र पर**  
**गाँव, तराई, ठांड़ और खादर प्रदेशों में सीमांकित**  
**किया गया है। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में नदियों**

के द्वारा लाए गए अवसंधों के निर्माण से निर्मित गिरीपदिय जलोढ़ मैदान को भाबर कहते हैं जहाँ सामान्यतः नदियाँ खरह से विलुप्त हो जाती हैं। भाबर के पक्षिण में नदियों के खरह पर आने के कारण निर्मित जलमहाव क्षेत्र को तडाई प्रदेश कहते हैं। पुरानी जलोढ़ से निर्मित ढाढ़ से अपभक्ति रूपी नदी बेसिन को बांगर कहते हैं वहीं नवीन जलोढ़ से निर्मित ढाढ़ से प्रभक्ति निम्न नदी बेसिन को खापर कहते हैं।

अपवाह तंत्र





**क्रमवर्ती नदियाँ (Sequential Streams)**

**अनुवर्ती**  
(Consequent)

(1°)

अपवाह तंत्र में **सर्वप्रथम** अनुवर्ती नदी की उत्पत्ति होती है जो मुख्य नदी नदी के रूप में **प्रादेशिक** ढाल का अनुसरण करती है। इसे **Dipstream** या **नतिसरिता** भी कहते हैं। जब मुख्य नदी अभिवृत्ति घाटी से होकर प्रवाहित होती है तो इसे **अभिवृत्ति सरिता** कहते हैं।

**परवर्ती**  
(Subsequent)

(2°)

मुख्य नदी से जाकर मिलने वाली **सहायक** नदी को परवर्ती कहते हैं।

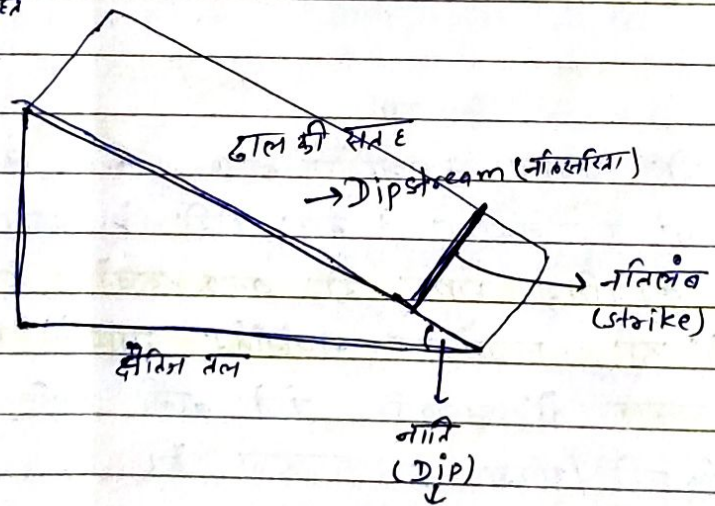
**प्रतिअनुवर्ती**  
(Obsequent)

**सहायक** नदी से भाकर मिलने वाली उन नदियों को प्रतिअनुवर्ती सरिता कहते हैं जिनकी दिशा मुख्य नदी के विपरीत लेकिन **समानांतर** होती है।

**नवानुवर्ती**  
(Resequent)

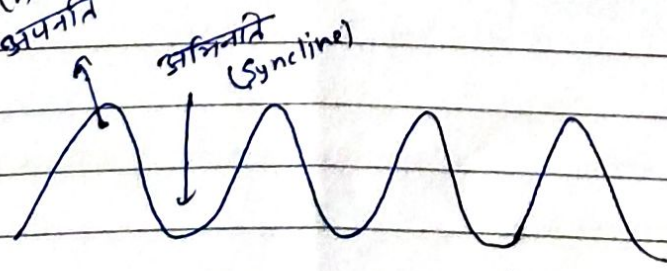
(3°)

अपवाह तंत्र के विकास के बाद जब क्षेत्रिक स्तर पर **स्चलखंड** का इत्थान होने के कारण नदी नदी की उत्पत्ति होती है जो **सहायक** नदी से जाकर मिल जाती है इसे **नवानुवर्ती** सरिता कहते हैं।



ढाल की तीव्रता और ढाल की दिशा को नियंत्रित करता है।

(Anticline) **अपवृत्ति**  
(Syncline) **अभिवृत्ति**



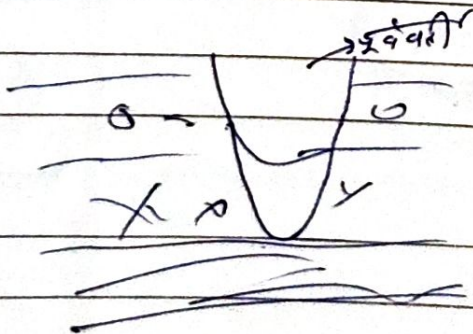
## अक्रमवर्ती नदियाँ (Insequent Stream)

पूर्ववर्ती नदियाँ  
(Antecedent Streams)

अच्यारोपित नदियाँ  
(Super imposed Streams)

पूर्ववर्ती नदियाँ - इसकी उत्पत्ति स्थलखंडों के विकास के पहले होती है। इस प्रकार की नदियाँ प्रादेशिक ढाल का अनुसरण करती हैं जहाँ पर्वतों को काटते हुए अपने वास्तविक मार्ग को बनाए रखने का प्रयास करती हैं। इसके लिए स्थलखंडों के उत्थान के कारण मंद होना चाहिए जिससे ही नदियों के द्वारा अपदन की क्रिया से अपने वास्तविक मार्ग को बनाए रखना संभव हो सके। हिमालय पर्वत से निकलने वाली अच्यारोपित नदियाँ पूर्ववर्ती हैं।

अच्यारोपित नदियाँ - इसकी उत्पत्ति स्थलखंडों के उत्थान या भूगर्भिक संरचना के विकास के बाद होती है। इस प्रकार की नदियाँ अपनी वास्तविक मार्ग को बनाए रखने के लिए एवं निर्मित धारियों का अच्यारोपण नवनिर्मित धारियों पर करती हैं। प्रायद्वीप पठार में अपवाह होने वाली अच्यारोपित नदियाँ अच्यारोपित नदी/सिंधु के उदाहरण हैं।



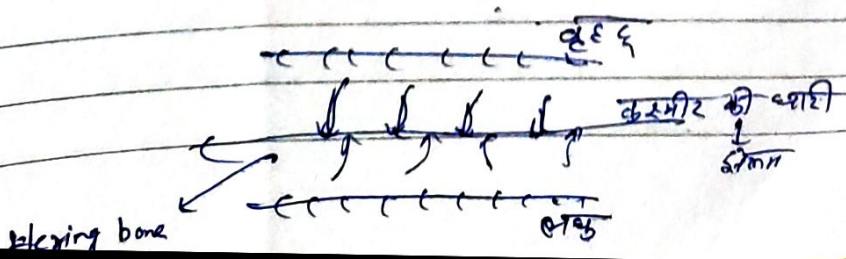
## अपवाह प्रतिरूप (Drainage Pattern)

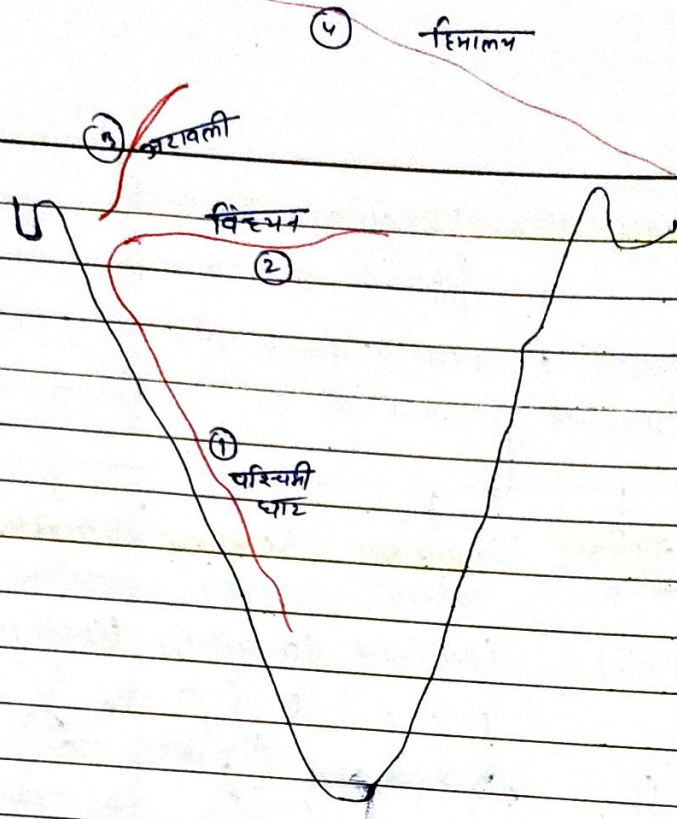
| तात्पर्य

स्वरिताओं के ज्यामितीय स्वरूप और स्थानिक विन्धास से है।

<b>वृक्षाकार</b> प्रतिरूप (Dendritic Pattern)	<b>जालीनुमा</b> प्रतिरूप (Trellis)	<b>आमताकार</b> प्रतिरूप (Rectangular)	<b>अभिडेन्ट्रिय</b> प्रतिरूप (Centripetal)	<b>अपडेन्ट्रिय</b> प्रतिरूप (Centrifugal)	<b>वलयाकार</b> प्रतिरूप (Annular)
<p>मुख्य नदी से जब सहायक नदी लंबवत आकर मिलती है। (प्रायः हीमालय पहाड़ी क्षेत्र में)</p>	<p>मुख्य नदी से जब सहायक नदी लंबवत आकर मिलती है। (प्रायः हीमालय पहाड़ी क्षेत्र में)</p>	<p>जालीनुमा प्रतिरूप के समान लोग हैं लेकिन इसमें मुख्य नदी के आकर मिलने वाली सहायक नदियों के बीच की दूरी अधिक होती है। (अंगम के मैदान में) अंगम के मैदान में अंगम से आकर मिलने वाली सहायक नदियों का एक एक इकाई विकास होता है।</p>	<p>जब किसी स्थिति में विभिन्न दिशाओं से आनेवाली नदियों का विकास होता है तब अपवाह प्रतिरूप अभिडेन्ट्रिय होता है। (लोकटक लेक)</p>	<p>किसी एक क्षेत्र में विभिन्न दिशाओं से नदियों का अपवाह होता है। (माउंट अमरकंटक)</p>	<p>पर्वत के चारों तरफ से दाल से लगे छोटे हुए बराबर मार्ग का अनुसरण करते हुए आकार की और आती है। (Dalma Hill)</p>

**समानांतर प्रतिरूप (Parallel):** इसका विकास पश्चिमी घाट के तटवर्ती डालों से आरंभ होता है जो कि गिरनेवाली नदियों के साथ होता है।





जल विभाजक  
संबन्धन अर्थात्

↓  
जल संसाधन

↓  
प्रादेशिक विकास  
और नियोजन

जल विभाजक के आधार पर अपवाह प्रदेश

